शब्द रचना

शब्द की परिभाषा

दो या दो से अधिक वर्णों से मिले सार्थक रुप को शब्द कहते हैं; जैसे – ज्ञान, क्षमा, कमल आदि।

ज्ञान शब्द दो वर्ण ज्ञा और न के योग से बना है जिसका अर्थ जानकारी होता है। यदि इसे हम इस प्रकार लिखे 'नज्ञा' तो इससे इसका सही अर्थ प्रकट नहीं हो रहा है। इसलिए इसे शब्द नहीं कह सकते।

शब्दों के प्रकार :- शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(1) रुढ़ शब्द

(2) यौगिक शब्द

(1) रुढ़ शब्द :- रुढ़ शब्दों को अन्य सार्थक खंडों में विभक्त नहीं किया जा सकता; जैसे - कैमरा, चश्मा, आइना, पक्षी आदि।

(2) यौगिक शब्द :- यौगिक शब्द, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है ; वे शब्द जिन्हें विभक्त किया जा सके और उसका सार्थक अर्थ हो, उसे यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे –

बाँसुरीवाला – बाँसुरी + वाला

विद्यालय – विद्या + आलय

सुशील – सु + शील

यौगिक शब्द तीन प्रकार के होते हैं -

1) उपसर्ग

2) प्रत्यय

3) समास

उपसर्ग

उपसर्ग :- उपसर्ग ऐसे शब्द हैं जिनका स्वतंत्र रुप में प्रयोग नहीं होता है क्योंकि अलग से इनका कोई विशेष महत्व नहीं होता है। ये मूल शब्द के शुरु में लगकर शब्द में विशेषता लाते हैं; जैसे - अ, अनु, अप, वि आदि उपसर्ग हैं।

(i) अ + भाव = अभाव

(ii) अप + मान = अपमान

(iii) अनु + शासन = अनुशासन

(iv) वि + राग = विराग

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रुप**
अ	अभाव	असत्य, अज्ञान, अमर, अचेतन, अनमोल, अनपढ़, अनुपमा, अनुमान
अन	के बिना	अनमोल, अनपढ़, अनुपमा, अनुमान
अनु	पीछे/समान	अनुमान, अनुपमा
अध	आधा	अधमरा, अधखिला
उन	कम	उन्नीस, उन्तीस
अव	कमी होना	अवगुण, अवमान्य
क, कु	बुरा	कुमार्ग, कुसंग, कलुषित, कपूत
दु	दो, बुरा	दुगुना, दुराहा (दो का अर्थ देने वाले शब्द) दुरात्मा, दुराचार (बुरे का अर्थ देने वाले शब्द)
नि	बिना	निडर, निराधार, निहत्था
पर	पराया, दूसरा	परदेश, परलोक, परदेशी
भर	भरा-पूरा	भरपेट, भरपूर
स, सत, सु	अच्छा	सपत, सगुण, सतसंग, सुपुत्र, सुलभ, सुगम
बे	के बिना	बेअदब, बेईमान, बेशर्म, बेइज़्ज़त, बेमन
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदमाश
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशमिज़ाज, खुशहाल, खुशख़बरी
हम	साथ	हमजोली, हमसफ़र, हमदम, हमदर्द
ला	न होना	लाइलाज़, लापरवाह, लावारिस
ग़ैर	निषेध	ग़ैर ज़िम्मेदार, ग़ैर कानूनी, ग़ैर हाज़िर
ना	न होना	नापसंद, नाराज़, नामुमकिन, नाकाम
प्र, प्रा	अधिक	प्रकोप, प्रगति, प्रवचन, प्रलय, प्राचीन
प्रति	विरोध, हर एक	प्रतिदिन, प्रतिपल, प्रतिद्वंदी, प्रतिफल, प्रयत्न, प्रसिद्ध
वि	विशेष, अभाव	विरोध, विफल, विकास, विलोम, वियोग, विशेष, विनम्र
सम्	पूर्ण, अच्छा	संपूर्ण, सम्मेलन, संकल्प, सम्पत्ति

निष्	रहित, न होना	निषेध, निष्कपट, निष्कलंक, निष्पाप
निर्	बिना	निराकार, निर्गुण, निर्दय
अति	अधिक	अत्याचार, अत्यधिक, अत्यंत, अतिश्योक्ति, अतिआवश्यक
उत्	ऊपर	उन्नति, उत्कर्ष
आ	समेत	आदान, आगमन, आसन
दुस्	बुरा	दुस्साहस, दुष्कर्म
दुर्	बुरा	दुर्गति, दुरात्मा, दुर्लभ, दुर्गम
अप	बुरा	अपमान, अपशब्द, अपकार, अपव्यय
अभि	बुरा	अभिशाप
अंत:	भीतर	अंत:करण, अंत:पुर, अंत:पुर, अंत:राष्ट्रीय
अन्तर:	भीतर	अन्तर्मन, अन्तर्राष्ट्रीय

प्रत्यय

ये भाषा के बहुत छोटे खंड है, जिनका अर्थ भी निकलता है ये मूल शब्द के अंत में जुड़ने पर नए शब्द बनाते हैं और शब्द में विशेषता लाते हैं;

जैसे -

शब्द	**प्रत्यय**	**नवीन शब्द रुप**
ईर्ष्या	लु	ईर्ष्यालु
स्वामी	त्व	स्वामित्व
भाग्य	शाली	भाग्यशाली
न्याय	इक	न्यायिक

प्रत्यय के प्रकार :- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं -

(1) कृत प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

(1) कृत प्रत्यय :- जो प्रत्यय धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं; जैसे - राखन + हारा = राखनहारा, पालन + हारा = पालनहारा, लिख + आवट = लिखावट आदि।

क्रिया शब्दों में लगने वाले प्रत्यय (कृत प्रत्यय) -

मूल शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय युक्त शब्द
नकल	ई	नकली
खोद	आई	खुदाई
तैयार	ई	तैयारी
चल	आऊ	चलाऊ
पालन	हार	पालनहार
कतर	नी	कतरनी
लिख	आवट	लिखावट
उड़	आन	उड़ान
कृपा	आलु	कृपालु
घबरा	आहट	घबराहट
खेल	ना	खेलना
दे	य	देय
लेन	दार	लेनदार
भूल	अक्कड़	भुलक्कड़

(2) तद्धित प्रत्यय :- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं -

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**प्रत्यय युक्त शब्द**
दुख	ई	दुखी
बच्चा	पन	बचपन
द्रव	इत	द्रवित
भारत	ईय	भारतीय
वास्तव	ईक	वास्तविक
अमर	ता	अमरता
पत्र	ईका	पत्रिका
प्रसन्न	ता	प्रसन्नता
चल	आऊ	चलाऊ
शक्ति	शाली	शक्तिशाली
ईश्वर	त्व	ईश्वरत्व
भाव	ना	भावना
स्वतंत्र	ता	स्वतंत्रता
घट	इया	घटिया
बुद्धि	मान	बुद्धधिमान
पंडित	आई	पंडिताई
बंढ़	आई	बढ़ाई
कोठा	री	कोठरी

अधिक	तर	अधिकतर
ग्रंथ	कार	ग्रंथकार
रंग	ईन	रंगीन
चाल	आक	चालाक
वर्ण	न	वर्णन
शिक्षा	क	शिक्षक

समास

जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनता है तो उसे समास कहते हैं; जैसे - स्नान + गृह = स्नानगृह अर्थात् एक शब्द है 'स्नान' (नहाना) उसके लिए जो जगह है उसे गृह (घर) कहते हैं तो दो शब्द स्नान + गृह से मिलकर एक शब्द बना स्नानगृह।

इसके पहले शब्द को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं। दोनों पद मिलकर समस्तपद बनाते हैं।

समास के मुख्य भेद

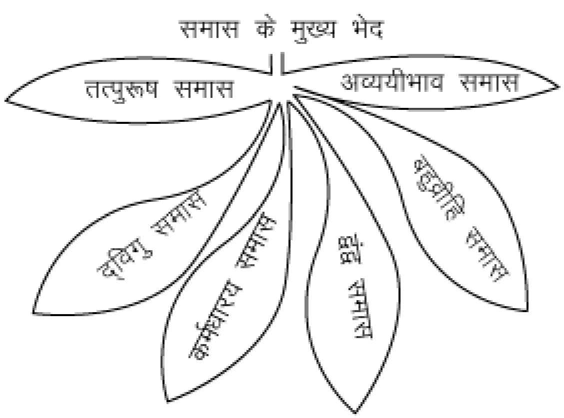

1. तत्पुरुष समास – इसका पहला पद अर्थात् पहला शब्द गौण और दूसरा शब्द प्रधान होता है; जैसे - आपबीती = आप पर बीती

कुछ उदाहरण -

समस्त पद	**विग्रह**
आशातीत	आशा से अतीत
गृहस्वामी	गृह का स्वामी
जन्मांध	जन्म से अंधा
पराधीन	पर के अधीन
भारतरत्न	भारत का रत्न
धर्मवीर	धर्म में वीर
गुणहीन	गुणों से हीन
दहीबड़ा	दही का बड़ा
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
भयभीत	भय से भीत
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
राजपुत्र	राजा का पुत्र
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
हस्तलिखित	हाथ से लिखा
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री

राजसभा	राजा की सभा
जेबघड़ी	जेब के लिए घड़ी
ग्रामगत	ग्राम को गया
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
भुखमरा	भूख से मरा
गोशाला	गौओं के लिए शाला
रसोईघर	रसोई के लिए घर
वनवास	वन में वास
शरणागत	शरण में आगत
हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी
रणवीर	रण में वीर

2. कर्मधारय समास :- इस समास में पहला शब्द विशेषण होता है और दूसरा शब्द जिसकी विशेषता बताई जाती है अर्थात् विशेष्य होता है; जैसे - पीतांबर (पीला) है जो अंबर (वस्त्र)

कुछ उदाहरण -

1	अंधकूप	अंधा है जो कूप
2	अधपका	आधा है जो पका
3	महात्मा	महान है जो आत्मा
4	नीलकंठ	नीला है जो कंठ
5	अकालमृत्यु	अकाल है जो मृत्यु

6	नीलांबर	नीला है जो अंबर
7	कालीमिर्च	काली है जो मिर्च
8	नीलगाय	नीली है जो गाय
9	दुरात्मा	दुर् (बुरी) है जो आत्मा

कभी-कभी विशेष्य पहले और विशेषण बाद में आ जाता है।

उदाहरण :-

1	घनश्याम	घन के समान	श्याम
2	चंद्रमुख	चंद्र के समान	मुख
3	देहलता	देह रुपी	लता
4	कमलचरण	कमल के समान	चरण
5	नरसिंह	नर रुपी	सिंह
6	क्रोधाग्नि	क्रोध रुपी	अग्नि
7	विद्याधन	विद्या रूपी	धन

3. बहुव्रीहि समास :- यह समास जैसा नाम है बहुव्रीहि अर्थात् बहुत रुप रखने वाला है। इसमें दोनों शब्दों (पदों) को मिलाने पर एक तीसरा कुछ और (अलग) अर्थ निकलता है और वह ही प्रधान होता है; जैसे – नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव। इसमें नील, कंठ दोनों गौण है तथा 'शिव' प्रधान है।

<u>कुछ उदाहरण</u> -

1	पीतांबर	पीला है वस्त्र जिसका	श्री कृष्ण
2	दशानन	दस है आनन जिसके	रावण
3	चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी	विष्णु
4	गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	श्री कृष्ण
5	गजानन	गज के आनन वाला	गणेश
6	तिरंगा	तीन रंग वाला	भारतीय ध्वज
7	जितेन्द्रिय	जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने	विष्णु (देवता)

8	त्रिलोचन	तीन है लोचन (नेत्र) जिसके	शिव
9	अंशुमाली	किरणे (अंशु) है माला जिसकी	सूर्य
10	घनश्याम	घन (बादल) के समान काला (श्याम)	श्री कृष्ण
11	पतझड़	जिसमें पत्ते झड़ते हैं।	विशेष ऋतु
12	विषधर	विष को धारण करने वाला।	साँप
13	षडानन	षड् (छह) मुख वाला।	कार्तिकेय

4. द्वंद्व समास :- इस समास में दोनों शब्द (पद) प्रधान होता है। द्वंद्व का अर्थ है जोड़ा। इसमें दोनों पदों को जोड़ने पर बीच का समुच्चयबोधक जैसे - और, या का लोप हो जाता है।

कुछ उदाहरण -

	समस्त पद	**विग्रह**
1	अन्न-जल	अन्न और जल
2	जीवन-मरण	जीवन और मरण
3	भला-बुरा	भला और बुरा
4	सुख-दुख	सुख और दुख
5	पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
6	राजा रंक	राजा और रंक
7	अपना-पराया	अपना और पराया
8	धनी-निर्धन	धनी और निर्धन
9	छोटा-बड़ा	छोटा और बड़ा
10	गुण-दोष	गुण और दोष
11	लाभ-हानि	लाभ और हानि
12	माता-पिता	माता और पिता
13	खरा-खोटा	खरा और खोटा
14	खट्टा-मीठा	खट्टा और मीठा

15	घर-द्वार	घर और द्वार
16	दाल-रोटी	दाल और रोटी

5. द्विगु समास :- इस समास में पहला पद (शब्द) संख्यावाची होता है; जैसे - तीन, चार, छः, कोई भी संख्या को बताता हो। दूसरा शब्द प्रधान होता है; जैसे - पाँच वृक्षो का स्थान।

उदाहरण -

1	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
2	नवरत्न	नौ (नव) रत्नों का समाहार
3	चारपाई	चार पैरों का समाहार
4	चवन्नी	चार आनों का समूह
5	सप्ताह	सात दिनों का समूह
6	सतसई	सात सौ दोहों का समूह
7	त्रिवेणी	तीन (वेणी) नदियों का समूह
8	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
9	पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
10	पंजाब	पाँच आबो (पानी) का समूह
11	दोपहर	दो पहरों का समाहार

6. अव्ययीभाव समास :- इस समास में पहला शब्द (पद) अव्यय होता है। अव्यय जैसे - यथा, भर, अनु, आ, बे आदि।

	समस्त पद	**विग्रह**
1	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
2	अनुरुप	रुप के योग्य
3	बेखटके	बिना खटके (आशंका के)
4	भरपेट	पेट भरकर
5	प्रतिदिन	हर दिन (रोज़ाना)
6	आजन्म	जन्म से लेकर

7	दिनोदिन	हर दिन
8	बीचोबीच	बीच ही बीच में
9	द्वार द्वार	हर एक द्वार
10	यथासंभव	जितना संभव हो सके

<u>समासों में अंतर</u>-

कुछ समासों में एक जैसे शब्द होते हैं इसलिए यह समझ में नहीं आता कि यह कौन सा समास है। इसको समझने के लिए इसके अंतर को जानना ज़रुरी है; जैसे – चतुर्भुज, नीलांबर, नीलकंठ, घनश्याम आदि।

1. द्विगु समास और बहुव्रीहि समास में अंतर -

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है जबकि बहुव्रीहि समास में पूरा पद विशेषण का काम करता है; जैसे -

चतुर्भुज – चार भुजाओं वाला (ये द्विगु समास है)

चतुर्भज – चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु, (ये बहुव्रीहि समास है)

2. कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास में अंतर –

कुछ शब्द ऐसे हैं जो दोनों में समान पाए जाते हैं। इनको अलग करने के लिए इनका विग्रह करना पड़ता है तभी इनका अंतर समझ में आता है।

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण तथा दूसरा विशेष्य होता है; जैसे - पीतांबर – पीला है जो अंबर।

बहुव्रीहि समास में दोनों ही पद प्रधान न होकर तीसरा ही अर्थ निकलता है; जैसे - पीतांबर – पीला है वस्त्र जिसका – कृष्ण।